

## International Journal of Applied Research

ISSN Print: 2394-7500 ISSN Online: 2394-5869 Impact Factor: 5.2 IJAR 2017; 3(8): 263-266 www.allresearchjournal.com Received: 01-06-2017 Accepted: 08-07-2017

डॉ. सर्वजीत दुबे एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत, अकादिमक प्रभारी, गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा, राजस्थान, भारत

# जनसामान्य और संस्कृत भाषा

## डॉ. सर्वजीत दुबे

#### सारांश

भारतीय संस्कृति संस्कृत पर आश्रित है। इस कथन का आधार यह है कि संस्कृत भाषा में निबद्ध ग्रंथों में जीवन के सभी क्षेत्रों से संबंधित सूक्ष्म और विस्तृत ज्ञान मिलता है। लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार की विद्याओं से संपन्न संस्कृत भाषा को सिर्फ एक वर्ग विशेष की भाषा होने का दुष्प्रचार किया जाए तो यह विशेष चिंता एवं चिंतन का विषय होना चाहिए। संस्कृत के लिए देववाणी का प्रयोग किया गया, इसका मतलब कदापि यह नहीं लेना चाहिए कि यह जनवाणी नहीं थी। ब्राह्मण ग्रंथों, पुराणों, महाकाव्यों, बौद्ध साहित्य, विदेशी यात्रियों के विवरणों के साथ भाषा वैज्ञानिकों के भी पर्याप्त प्रमाण है कि संस्कृत लोक -व्यवहार की भाषा थी। किंतु कालक्रम से साहित्यिक रूप वाले संस्कृत और व्यावहारिक रूप वाले संस्कृत में अंतर आ गया। साहित्यिक संस्कृत की शुद्धता और विषय गंभीरता के कारण संस्कृत को देववाणी कहा जाने लगा लेकिन व्यावहारिक संस्कृत के जनसामान्य में उपयोग होने से इस भाषा का अन्य रूप विकसित होने लगा जिससे प्राचीन और आधुनिक कई भाषाएं अस्तित्व में आईं। यदि आज संस्कृत बोलचाल की भाषा नहीं है तो सामान्य जन को संस्कृत भाषा से जोड़ने के लिए विशेष प्रयास किया जाना चाहिए; यदि सामान्य जन संस्कृत भाषा नहीं सीख पाते हैं तब भी संस्कृत में निहित ज्ञान सामान्य लोगों के लिए उनकी बोलचाल की भाषा में उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाना चाहिए।

कूट शब्द: ब्राह्मण ग्रंथ, पुराण, महाकाव्य, आर्य भाषा, दीक्षित वाक्, दैवी-भाषा, मानुषी-भाषा।

#### प्रस्तावना

कुछ निहित स्वार्थ वाले लोगों द्वारा सामान्य लोगों में यह बात प्रचारित की गई है कि संस्कृत कभी जनसामान्य की भाषा न थी और न है। यह तो एक वर्ग विशेष की भाषा थी जिसका उपयोग उस (ब्राह्मण) वर्ग ने अपने को उच्च सिद्ध करने के लिए एवं अपना स्वार्थ सीधा करने के लिए किया। इस आरोप में थोड़ी बहुत सच्चाई यह है कि संस्कृत नाटकों में उच्च कोटि के पात्र ही संस्कृत भाषा का प्रयोग करते हैं, स्त्री एवं अन्य पात्र प्राकृत भाषा में बात करते हैं। परंतु प्राचीन ग्रंथों का, संस्कृत साहित्य के इतिहास का तथा भाषा विज्ञान का<sup>1</sup> अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक काल से महाकाव्य काल तक संस्कृत भाषा न केवल परंपरागत शिक्षा का माध्यम थी बल्कि वह लोक-व्यवहार्या भाषा भी थी।

### (क) विभिन्न ब्राह्मण ग्रंथों के प्रमाण

शतपथ ब्राह्मण में यह वर्णन किया गया है कि श्रुतियों के संग से हीन गृहस्थों, नवयुवकों, नवयुवितयों, पापियों, कुसीदकों (सूद पर ऋण देने वालों) तथा अन्य सामान्य लोगों को भी ब्राह्मण-पुरोहित लोग आख्यान, पौराणिक कथाओं, ऋग्वेद,

Corresponding Author: डॉ. सर्वजीत दुबे एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत, अकादिमक प्रभारी, गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाडा, राजस्थान, भारत सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सर्वविद्या, देवजन-विद्या, जादू, इतिहास तथा पुराण आदि विषयों को पढ़ाते थे। इससे यह स्पष्ट है कि उस समय इन विषयों की शिक्षा सर्वसामान्य को दी जाती थी और सामान्य लोगों द्वारा व्यवहार की जाने वाली भाषा भी संस्कृत थी।<sup>2</sup>

श्री एफ.डब्ल्यू थामस ने लिखा है कि ब्राह्मण काल से लेकर बहुत बाद के काल तक संस्कृत धार्मिक संस्कारों की, घरेलू धार्मिक कृत्यों की,शिक्षा की तथा विज्ञान की भाषा थी। अन्य विभिन्न लेखों या प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि उस समय दो प्रकार की भाषाएं प्रचलित थीं। मैत्रायणी संहिता में वैदिक एवं वैदिकेतर भाषा के प्रचलित होने के तथा ऐतरेय ब्राह्मण में दैवी एवं मानुषी "भाषाओं के अस्तित्व के स्पष्ट उल्लेख मिलते हैं। उक्त वचनों से यह प्रमाणित होता है कि उस समय एक तो वैदिक भाषा प्रचलित थी जिसे ऐतरेय ब्राह्मण में दैवी भाषा कहा गया है और दूसरी भाषा लौकिक संस्कृत भाषा थी। लोक भाषा को सायण ने अपभ्रंश माना है परंतु डॉ.राधाकुमुद मुखर्जी ने उस समय अपभ्रंश के प्रयोग का खंडन करते हुए संस्कृत भाषा को ही लोकव्यवहता भाषा माना है।

ऐतरेय आरण्यक में आर्यभाषा का उल्लेख किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय आर्य तथा अनार्य दो प्रकार की भाषाएं प्रचलित थीं। आर्य भाषा आर्यों द्वारा व्यवहृता भाषा थी और अनार्य भाषा आर्येतर लोगों द्वारा व्यवहृता भाषा थी।

शतपथ तथा कौशितकी ब्राह्मणों के अनुसार उस समय संस्कृत का सर्वाधिक प्रचलन कुरू-पांचालों तथा उत्तर कुरूओं के राज्य कश्मीर में था। वहां जाकर लोग संस्कृत भाषा का अध्ययन करते थे। इससे यह स्पष्ट है कि संस्कृत लोकभाषा के रूप में यहां और अन्यत्र भी प्रचलित थी। शतपथ ब्राह्मण में संस्कृत वाणी वाले लोगों के संपर्क से दूर रहने की बात कही गई है।

लागा क सपके स दूर रहन का बात कहा गई है।
पंचिवंश ब्राम्हण में ऐसे व्यक्तियों की चर्चा की गई है जो
अदीक्षित होने के कारण दीक्षित लोगों की वाणी बोलने
में किठनाई का अनुभव करते थे। दीक्षितवाक् के
किठन होने के कारण वे उसे दुरुक्त या बोलने में
किठन कहते थे। शतपथ ब्राह्मण में कुरु या पांचालों
को ब्राह्मण संस्कृति का केंद्र बताया गया है। इसके
अलावा कोशल एवं विदेह को भी ब्राह्मण संस्कृति से
पूर्णतः प्रभावित बताया गया है। ऐतरेय ब्राह्मण आदि में
वस, उशीनर, काशी, उत्तर मद्रास, कुरुक्षेत्र, मत्स्य, शूरसेन
तथा मगध आदि बहुसंख्यक राज्यों एवं शासकों का
वर्णन किया गया है जिनके यहां ब्राह्मणीय शिक्षा की
परंपरा के अनुकूल शास्तीय तत्वबोध के लिए संस्कृत
माध्यम से विचार-विमर्श एवं शास्तार्थ होते थे।

### (ख) पुराणों एवं महाकाव्यों के प्रमाण

वाल्मीकि रामायण के सुंदरकांड में यह प्रसंग आया है कि हनुमान जब अशोक वाटिका में माता सीता के पास पहुंचे तब उन्होंने उनसे वार्ता के लिए 'दैवी भाषा/ वैदिक भाषा "का उपयोग न कर मानुषी भाषा अर्थात् संस्कृत भाषा के माध्यम का प्रयोग करना श्रेयस्कर समझा।10 इससे दो बातें प्रमाणित होती हैं,एक तो यह कि उस समय देव भाषा या दैवी भाषा को मानुषी भाषा या लोक भाषा से भिन्न समझा जाता था और दूसरा यह कि उस समय संस्कृत सर्वसामान्य की व्यवहार्या भाषा थी। दंडी ने काव्यादर्श में संस्कृत को देवभाषा 'कहा है, जिससे यह प्रतीत होता है कि उस समय तक लौकिक संस्कृत ही देवभाषा के रूप में मान्य होने लगी थी।<sup>11</sup> जो भी हो यह निश्चित है कि महाभारत काल तक आते-आते वैदिक भाषा दुरूह समझी जाने लगी थी और वैदिक वांग्मय का अध्ययन वैवर्णिकों के लिए अनिवार्य नहीं रह गया था और संस्कृत सर्वसामान्य द्वारा व्यवहृता या बोध के योग्य लोकभाषा हो गई थी। क्योंकि पंचम वेद के रूप में मान्यता प्राप्त महाभारत की रचना सर्वसामान्य पुरुषों या स्त्रियों के अध्ययन के लिए की गई थी, जिससे दुरुह वैदिक वांग्मय में निहित तत्वों का ज्ञान सरलता से हो सके। श्री हर्ष कृत "नैषध" महाकाव्य के अध्ययन से भी यह सिद्ध होता है कि उस समय संस्कृत ही लोक भाषा के रूप में व्यवहृत थी।

### (ग) भाषा विज्ञान के प्रमाण

भाषा विज्ञान के विशेषज्ञ भी एकमत से यह मानते हैं कि ई.पूर्व 500 तक संस्कृत सर्वसामान्य के बोलचाल की भाषा थी।12 लोक भाषा के रूप में अपभ्रंश या प्राकृत का प्रचलन पाणिनि के बहुत दिनों बाद हुआ क्योंकि उन्होंने लौकिक (संस्कृत) भाषा तथा वैदिक (या छंदों की) भाषा के भेद का उल्लेख किया है। प्राकृतों का आविर्भाव संभवत: पतंजिल के समय के आसपास हुआ। पतंजिल ने नाटक संबंधी ज्ञान का उल्लेख किया है। नाटकों के पात्रों के संवादों में संस्कृत का तथा प्राकृतों का -दोनों ही प्रकार की भाषाओं का प्रयोग उपलब्ध होता है। उच्च वर्ग के लोगों के संवाद संस्कृत में तथा निम्न वर्ग एवं शुद्र वर्ग के लोगों के संवाद प्राकृत में उक्त हैं। इससे दो बातें स्पष्ट होती हैं -एक तो यह कि उच्च या सुशिक्षित वर्ग के लोगों की व्यावहारिकी भाषा लौकिक संस्कृत भाषा थी जबकि निम्न वर्गीं तथा अशिक्षित वर्ग के लोगों की व्यावहारिकी भाषा प्राकृत हो गई थी। परंतु यह सिद्ध है कि प्राकृतभाषी लोग उच्च एवं सुशिक्षित वर्ग के लोगों द्वारा व्यवहृत संस्कृत भाषा को समझने में सक्षम थे।

#### (घ) बौद्ध साहित्य एवं विदेशी यात्रियों के प्रमाण

जातकों के अथवा बौद्धकालीन इतिहास के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि बौद्ध धर्म से प्रभावित लोग या सामान्य स्तर के लोग प्राकृत भाषा का व्यवहार करते थे जबकि उस समय भी ब्राह्मणीय शिक्षा का माध्यम संस्कृत भाषा थी। फाह्मान के विवरणों से यह ज्ञात होता है कि बौद्ध लोग भी संस्कृत में लिखते थे। बौद्ध धर्म के ग्रंथों से भी यह स्पष्ट है कि सुशिक्षित लोगों की भाषा संस्कृत तथा सामान्य लोगों की भाषा पाली थी जो संस्कृत की ही अपभ्रंश भाषा थी। बौद्ध लोग सर्वसामान्य में प्रचार करने की दृष्टि से पाली भाषा के माध्यम का व्यवहार भले ही करते रहे हों, परंतु वे लोग स्वयं भी संस्कृत भाषाविद्द होते थे।

यहूदी, ग्रीक तथा रोमन लेखकों, ह्वेनसांग (ई. 629 से 645 के मध्य), साइचिन, होईसेंग, सौंगयून एवं इत्सिंग (677 से 691 ई. के मध्य) जैसे चीनी यात्रियों के तथा याकूब, अलमुनिमका, इब्नबत्ता एवं अलबरूनी जैसे मुस्लिम यात्रियों के विवरणों से और फारस के शाह खुसरो नौशेरवा द्वारा कराए गए अनुवादों से यह सर्वथा प्रमाणित है कि 10 वीं शताब्दी तक संस्कृत भाषा सुशिक्षित लोगों की लोकव्यवहार्य भाषा अवश्य थी।

किसी भी भाषा के दो रूप होते हैं -एक तो व्यावहारिक भाषा और दूसरा साहित्यिक भाषा। व्यावहारिक भाषा सामान्य व्यावहारिक जीवन में काम आने वाली सरल भाषा होती है जिसका प्रयोग व्यक्तिगत पत्रों, समाचारपत्रों, कथा-कहानियों, उपन्यासों तथा सामान्य स्तर की पुस्तकों में होता है। दूसरी भाषा साहित्यिक भाषा होती है जो शोध-पत्रिकाओं, शास्त्रीय ग्रंथों, काव्यों तथा पाठ्यपुस्तकों में व्यवहृत होती है।

संस्कृत के व्यावहारिक रूप से एक तरफ प्राचीन प्राकृत, पाली इत्यादि भाषाएं विकसित हुईं तो दूसरी तरफ आधुनिक हिंदी, बांग्ला, मराठी, पंजाबी, सिंधी, नेपाली इत्यादि भाषाएं विकसित हुईं।

संस्कृत के साहित्यिक रूप से ज्ञान विज्ञान के समस्त ग्रंथ विकसित हुए। संस्कृत साहित्य का वांग्मय तो अनंत एवं अनुपम ज्ञान का भंडार है। मानव के कल्पना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले लौकिक, पारलौकिक, दृष्ट एवं अदृष्ट अर्थात् धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष संबंधी सभी विषयों के ज्ञान की अतुल राशि संस्कृत वांग्मय में हैं। वस्तुतः संस्कृत भाषा वह अवगुंठन है जिसमें लोकोत्तर कमनीया, सर्वगुणसंपन्ना, सर्वालंकारभूषिता संस्कृत-वांग्मय रूपी कामिनी अपरिचित या अवांछनीय व्यक्ति के सम्मुख लज्जाभिभूता या संकृचिता होकर अपने अपूर्व रूप को तिरोहित किए रहती है, जो व्यक्ति उससे परिचय के योग्य होकर उसकी लज्जा का निवारण करने में समर्थ होता है,वही उसके अदृभृत सौंदर्य का अनुभव तथा उसके रस का आस्वादन कर कृतार्थ हो सकता है। एम पतंजिल शास्त्री जी के शब्दों में-"If our religion has been the storehouse of our cultural values and traditions, Sanskrit has been their principle medium of expression through the ages."

पाश्चात्य दार्शनिक शॉपेनहावर संस्कृत के ग्रंथों का अध्ययन कर इतना अभिभूत हो गये कि उन्होंने इसे जीवन और मृत्यु दोनों की कुंजी कहा-"The study of these books have been the solace of my life, it will be solace of my death."

मैक्समूलर ने कहा है कि आप अपने विशेष अध्ययन के लिए जिस किसी बौद्धिक क्षेत्र का चयन करें, चाहे वह भाषा का हो या धर्म का हो, पौराणिक कथाओं का हो या दर्शन का हो, कानूनों का हो या रीति-रिवाजों का, प्राचीन कलाओं का हो या प्राचीन विज्ञान का, आपको यह रुचिकर प्रतीत हो या न हो आपको भारत जाना होगा क्योंकि मानव इतिहास की कुछ बहुमूल्य एवं शिक्षाप्रद सामग्रियां केवल भारत में ही संचित हैं।

भाषा जोडने का काम करती है किंतु यह दुर्भाग्य है कि भाषा को राजनीति ने विभाजन का आधार बना दिया। दक्षिण भारत के राज्यों में हिंदी का विरोध और महाराष्ट्र में गैर मराठी भाषी लोगों का विरोध इस बात का परिचायक है कि समृद्धि के साधनों को भी संघर्ष का विषय बना लेने में कुछ लोग सिद्धहस्त हैं। ऐसे ही स्वार्थी तत्वों द्वारा संस्कृत को सिर्फ ब्राह्मणों की भाषा या कर्मकांड की भाषा सिद्ध करने का प्रयत्न किया जा रहा है। संस्कृत विरोधी ऐसे अभियान से संस्कृत भाषा की गौरव गरिमा कम नहीं होती; लेकिन बहुत लोग इस अमृत भाषा से दूर होकर संस्कृत भाषा में सुरक्षित ज्ञान के अथाह भंडार से अवश्य वंचित रह जाएंगे। ऐसी परिस्थिति और मन: स्थिति के कारण ही 1985 ई. में राष्ट्रीय स्तर पर नई शिक्षा नीति के अंतर्गत त्रिभाषा सूत्र का ऐसा प्रारूप तैयार किया गया कि संस्कृत पढ़ने की अनिवार्यता खत्म कर दी गई। युनेस्को से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार डेनमार्क, जर्मनी, नार्वे में 4 भाषाएं पढ़ाई जाती हैं: ब्राज़ील और फ्रांस में 5 भाषाएं तथा नीदरलैंड में तो 6 भाषाएं पढाई जाती हैं। ऐसे में त्रिभाषा फार्मुला पर पुनर्विचार होना चाहिए। भारतीय संस्कृति संस्कृत पर आश्रित है और उस भाषा से दूर होकर हमारी नई पीढी संस्कार से भी दूर हो रही है।

ब्राह्मणों द्वारा संपादित किए जाने वाले कर्मकांड के अवसरों पर जो संस्कृत वाणी गूंजती हैं, उसका भी अपना एक विशेष महत्व है। भारतीय जीवन जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न संस्कारों में आबद्ध है, उन संस्कारों के प्रति आज भी श्रद्धा है। बस जरूरत है कि संस्कार संपादन के अवसर पर पंडितों द्वारा बोले जाने वाले संस्कृत मंत्रों और शब्दों के अर्थ को भी

जनसामान्य को सरल और सरस ढंग से समझाया जाए। परंपरा ने संस्कृत भाषा को सुरक्षित रखा है, क्रांति के नाम पर परंपरा को छोड़ देने की जरूरत नहीं है बल्कि परंपरा पर जमी राख को झाड़ कर उसमें छुपी ज्ञानाग्नि को प्रज्वलित करने की जरूरत है।

इस शोध लेख के माध्यम से मेरा उद्देश्य यह है कि प्रयत्नपूर्वक संस्कृत भाषा से सामान्य जन को जोड़ने का विशेष प्रयास किया जाना चाहिए ताकि विश्व गुरु की पदवी दिलाने वाली संस्कृत भाषा से दूर होकर हम अपने अमूल्य धन से वंचित होकर कहीं दिरद्र न हो जाएं। यदि संस्कृत बोलचाल की भाषा न बन पाए तो भी इस भाषा में निबद्ध ज्ञान-विज्ञान को संस्कृतभाषी लोगों द्वारा जनसामान्य की भाषा में सभी के लिए उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाना चाहिए ताकि भौतिकता की आंधी में गलत मार्ग पर जा रही पीढ़ी को आध्यात्मिकता के मार्ग पर लाया जा सके।

#### संदर्भ

- मैक्समूलर कृत 'द साइंस ऑफ़ लैंग्वेज' का श्री उदय नारायण तिवारी कृत हिंदी भाषा अनुवाद पृष्ठ 127-152, भाषा विज्ञान की भूमिका देवेंद्र शर्मा पृष्ठ 127
- 2. शतपथ ब्राह्मण 13/4/3
- 3. "Sanskrit was the language of public religious rites, of domestic ceremonies, of education and of science". (Journal of royal Asiatic society 1904).
- 4. यश्च वेद यश्च न....
- 5. इति वै दैवम् तथेति मानुषम्...।
- 6. Sanskrit of the humans and ritual the language of divine service and the Sanskrit of ordinary conversation respectively not as Sayan suggests, for Sanskrit and Apabhramsha". (Ancient Indian education RK Mukherjee PP 139).
- 7. आर्यवाचा:...111, 2.5
- शतपथ ब्राह्मण 111, 2, 3, 15 कौशितकी ब्राह्मण 11.6
- कौशीतकी ब्राम्हण 1.9 व्रात्य संभवत आर्य थे जो क्रमशः प्राकृत का विकास कर रहे थे। वैदिक इंडेक्स: मैकडॉनल् -वाच तथा व्रात्य के प्रसंग में
- 10. मानुषिमिह संस्कृताम्...लंका कांड
- 11. काव्यादर्श 1.33
- 12. भाषा विज्ञान की भूमिका: देवेंद्र शर्मा पृष्ठ 127